: चतुर्थ अध्याय :

"विवेच्य उपन्यासों में चित्रित प्रमुख पुरुष पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन"

: चतुर्थ अध्याय :

``विवेच्य उपन्यासों में चित्रित प्रमुख पुरुष पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन``

उपन्यास साहित्य में `कथावस्तु` उपन्यास का प्राणतत्व होता है, तो `पात्र तथा चरित्र-चित्रण` उपन्यास का प्राणभूत तत्त्व माना जाता है। उपन्यास में चरित्र-चित्रण का बड़ा महत्त्व होता है। डॉ.शांतिस्वरुप गुप्त जी के मतानुसार - ``किसी भी पात्र के व्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं - बाहय और आंतरिक। बाहय व्यक्तित्व के अंतर्गत उसका आकार, रुप, वेशभूषा, आचरण का ढंग, बातचीत आदि आते हैं। और आंतरिक पक्ष का संबंध उसकी मानसिक तथा बौद्धिक विशेषताओं से होता है।``[1] सफल चरित्र-चित्रण के लिए मानव-स्वभाव का सामान्य ज्ञान, मनुष्य के अंतर्मन का परिचय, उसके भावों, विचारों, राग-द्वेषों, अंत:संघर्षों की जानकारी के अतिरिक्त सहानुभूति, कल्पनाशक्ति तथा वर्ग-विशेष की जानकारी अपेक्षित है।

चरित्र-चित्रण के प्रमुख चार भेद किए जाते हैं - व्यक्ति-प्रधान, वर्ग प्रधान, स्थिर तथा परिवर्तनशील पात्र। अज्ञेय जी ने अपने उपन्यासों में सफलता के साथ पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है। इनके तीन उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं परंतु अंतिम उपन्यास `अपने-अपने अजनबी` में कोई प्रधान पुरुष पात्र नहीं है। प्रधान पुरुष पात्रों में `शेखर : एक जीवनी` का नायक शेखर एवं `नदी के द्वीप` के भुवन और चंद्रमाधव ही प्रमुख पुरुष पात्र हैं।

4.1 शेखर :-

अज्ञेय जी ने अपने उपन्यासों में पात्रों के चरित्र में वैचारिकता का ही अधिक चित्रण किया है। वे संपूर्ण समाज को उसके वास्तविक रुप में चित्रित करने की अपेक्षा एक व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों में रखकर उसके वास्तविक जीवन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म छानबीन करना अधिक उचित समझते हैं। उनके `शेखर : एक जीवनी` का शेखर ऐसा ही एक व्यक्ति है जो जीवन भर विद्रोह करता है। परंतु अज्ञेय जी ने केवल उसके विद्रोही जीवन का चित्रण ही नहीं किया है बल्कि उसका निर्माण भी दिखलाया है। शेखर

की जीवन-सरिता इतनी चौड़ी है कि जिसके अंदर देश, काल संबंधी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा नैतिक सभी समस्याएँ समा गई हैं फिर भी लेखक का एकमात्र लक्ष्य नायक की वैयक्तिकता का चित्रण मात्र ही है। इसके साथ ही उसके व्यक्तित्व की अहंवादी, जिज्ञासु, प्रतिभासंपन्न, अनुभूतियों के प्रति ईमानदार, क्रांतिकारी आदि विशेषताओं का चित्रण भी सशक्तता के साथ किया है।

4.1.1 जिज्ञासूवृत्ति :-

मनोविज्ञान के अंतर्गत हम देखते है कि बालकों में जिज्ञासू वृत्ति होती ही है। अत: शेखर में भी अपनी जिज्ञासाओं के प्रति बेहद ईमानदारी दिखाई देती है। शेखर के अंदर एक सशक्त कुतूहल है। वह किसी वस्तु को देखकर या उसके बारे में किसी से सुनकर ही संतोष नहीं करता बल्कि उसके मूल में क्या है उसे जानने के लिए हमेशा उत्सुक रहता है। जब तक उसने माँ और पिता को दोपहरी में एक चार-पाई पर सटे हुए देख नहीं लिया तब तक `बच्चे कहाँ से आते हैं` यह जिज्ञासा उसे पागल बनाए रखती है। यह बाल स्वभाव है कि जिस किसी वस्तु के लिए निषेध किया जाय उसके लिए उत्सुकता में वेग आ जाता है। अपनी जिज्ञासू वृत्ति के कारण शेखर को अनेक अनुभूतियों का सामना करना पड़ता है। पाँच वर्ष की आयु में इसी जिज्ञासावश वह पिताजी के किताब लिखने का अंधानुकरण करता है। वह अलग-अलग वृक्षों के मूल और पत्ते इकट्ठे कर उन्हें सुखाकर पन्नों पर चिपकाता है। हर फूल की जानकारी नीचे लिखता है। लेखक यहाँ पर अनेक घटनाओं के अंकन से शेखर की जिज्ञासू वृत्ति का चित्रण बहुत ही बारिकी से करतें हैं।

एक बार तैरते हुए बड़े भाई को देखकर जिज्ञासावश शेखर भी झील में कुद पड़ता है क्योंकि उसे तैरना नहीं आता था। परंतु बडी मुश्किल से माँझी उसे बचा लेता है। होश आने पर पिताजी की डाँट सुननी पढती है। सभी के डाँटने पर वह सोचता है - क्या मृत्यु सचमुच बुरी बात है? इसी जिज्ञासा में वह एक बार माँ से पुछता है - `माँ तुम कब मरोगी ?` इस प्रश्न के जवाब में शेखर की घरवालों से खूब पिटाई होती है परंतु उसकी मृत्यु विषयक जिज्ञासा और अधिक प्रबल होती है। यही मनोवैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत घटनाओं के माध्यम से स्पष्ट होता है।

शेखर की जिज्ञासू वृत्ति के संदर्भ में गिरीधर प्रसाद शर्मा लिखते हैं - ``शेखर अपनी

इच्छा के अनुसार चलता है। इच्छा-पूर्ति के मार्ग की बाधा को वह सह नहीं पाता है। जन्म, मृत्यु, ईश्वर आदि के विषय में उसके मन में जिज्ञासा पैदा होती है। ईश्वर के अस्तित्व को वह अस्वीकार करता है। वह सब कुछ प्रकृति से सीखता है। तोते से वह स्वतंत्र रहना सीखता है ; गोमती तट की संध्या से उसे सौंदर्य का बोध होता है ; तीव्र गति से दौड़ते हुए घोडे की गति से उसे स्वत: संपूर्ण लय का ज्ञान होता है। वीर महावीर जिन की मूर्ति उसमें स्थिरता और सामर्थ्य जगाती है। प्रकृति को छोड़कर उसकी प्रतिभा का निर्देश करनेवाली बुद्धि अन्यत्र नहीं है। जिज्ञासु शेखर समाज को परंपरा के चश्में से नहीं देखता है, अपनी खुली दृष्टि से देखता है और अपने सहज ज्ञान के सहारे उसका नया मूल्यांकन करता है।``[2] इन प्रसंगों में शेखर की जिज्ञासू वृत्ति दिखाई देती है।

4.1.2 अहंवादी :-

मनोविज्ञान के अनुसार अहं हर एक मानवप्राणी में पाया जाता है। परंतु उसकी मात्रा कम-अधिक होती है। शेखर इस नियम के लिए अपवाद नहीं है। बचपन से ही वह अपने अहंभाव में विलक्षण है। वह प्राय: अलग, अकेला बैठा सोचता है। उसका सहज मेल किसी से नहीं हो पाता, भाईयों से नहीं,माता-पिता से नहीं। मानों भीतर का अकेलापन उसे भटकाता है। शेखर में उद्धत अहं है। अहं का मोटे तौर पर अर्थ है अपने आपको पहचानना। इस पहचान में व्यक्ति पर अथवा दूसरों से अलगाव को पहचानता रहता है। अलगाव के भीतर से कही एकता को पाने की इच्छा भी उसमें रहती है। यह बात शेखर में भी है, किंतु उसका तरीका अपना है। वह दूसरों को स्वीकार नहीं करता ; नहीं कर सकता। दूसरे ही उसे स्वीकारें यदि कोई उसे स्वीकारता है तो उसके निकट वह समर्पित भी हो सकता है। उसका प्रबल अहं प्रचलित सामाजिक व्यवस्था में सर्वत्र विद्रोह का रुप धारण करता है। शेखर अपनी प्रकृति का राजा है, जिसने उसे अत्यंत अहंवादी बना दिया है। डॉ.त्रिभूवनसिंह शेखर के अहं के संदर्भ में टिप्पणी करते हुए लिखते हैं - ``शेखर के स्वभाव ने किसी के अधिपत्य में रहना नहीं सीखा है बल्कि दबाव का उलटा प्रभाव उसके ऊपर पड़ता है। मास्टर साहब को परेशान करने के अपराध में जब वह पीटा जाता है तो और भी उसका `थुक्कू' कह कर चिढ़ाना बालकों की प्रवृत्ति के अनुकूल ही है। विवश होकर किसी कार्य का करना उसके स्वभाव के प्रतिकूल ही है। अनुकरण तथा प्रतियोगिता की भावना का होना बालकों का स्वाभाविक गुण है।``[3] बचपन में प्रतिभा नामक लडकी से उसकी दोस्ती हो जाती है। एक दिन प्रतिभा के घर वह खानाा खाने बैठता है, पर

अँगरेजी तौर-तरिकों से न खा पाने के कारण भूखा ही रह जाता है। प्रतिभा उसका मजाक उड़ाती है तो उसके स्वाभिमान को भारी ठेस पहुँचती है और उसी दिन से वह प्रतिभा का साथ छोड़ देता है। इसी प्रकार लेखक ने शेखर के व्यक्तित्व में उसके अहं की झाँकियाँ चित्रित की है।

4.1.3 कामुकता :-

अज्ञेय ने शेखर के राग (लिबिडो) का विकास बहुत ही बारिकी से चित्रित किया है। परिवार में माता-पिता के पारस्पारिक व्यवहारों, पिता के अनैतिक आचरणों, माँ के प्रति उनका बलात व्यवहार माँ का छाती फाड़कर चिल्लाना, नौकरानी का पीठ उघाडकर दिखाना आदि से उसके मन में यौन संबंधी भावनाएँ उमड़ती हैं जिनके अस्वाभाविक दमन के फलस्वरुप वह `दोजारु का पति` और `सुंदरी डाकू` आदि अश्लील पुस्तके पढ़ने लगता है। बाल-शेखर की प्राकृतिक प्रवृत्तियाँ समय पाकर धीरे-धीरे जगती हैं परंतु उसके अंदर यह कैसा परिवर्तन होता जा रहा है, उसका उसे ज्ञान नहीं, किंतु यदि वह शारदा से नहीं मिलता, तो इतना जान सका है कि उसे चैन नहीं पड़ता। एकांत निर्जन घास पर शारदा के पास बैठा वह कामातुर हो जाता है। उसका सारा शरीर झनझना उठता है। वह कसकर धरती से औंधा होकर चिपट जाना चाहता है। शारदा को स्पर्श करता है तो शारदा भी काँपती हुई दिखाई पड़ती है, किंतु यह सब क्या है और क्यों है उसे ज्ञात नहीं। अत्ती की नंगी पीठ तथा उसके केशों का सुगंध आदि का प्रभाव, सावित्री का मौन, शशि का आग्रह, शारदा का कंपन सब क्या था, तब उसकी समझ में आया जब उसने अपनी पहले देखी हुई एक पुस्तक पढ़ी, जिससे नारी का संपर्क उसके लिए वरदान सिद्ध हो गया और वह प्यार की शक्ति को पहचान पाया। मानव-जीवन में प्रेम ही एक ऐसा सूत्र है जिसके द्वारा समाज का गठन संभव हो सका है और प्रेम की प्रधान वृत्ति वासना ही वह ऐसी शक्ति है, जिसके कारण सृष्टि संभव हो सकी है। हमें शेखर के जीवन-विकास से स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य के लिए कामनामय वृत्ति की उपेक्षा करना संभव नहीं है। यही कारण है कि, विद्रोही शेखर का सम्पूर्ण जीवन नारी प्रभाओं से आहत रहा है। वह नारी के प्रति प्रारंभ से ही आकृष्ट बल्कि आसक्त रहा है। वह किसी भी वस्तु या व्यक्ति के प्रति विद्रोह पूर्ण आचरण कर सकता है, पर नारी उसकी दुर्बलता है, सरस्वती, शशि, शारदा, शीला, शान्ति, मणिका आदि सभी के प्रति वह आकर्षित है, परंतु पूर्ण रुप से वह किसी भी नारी को प्राप्त नहीं करता। डॉ.मदान लिखते हैं ``शेखर की संतुष्टि नारी के स्पर्श मात्र से हो जाती है। उसे नारी के छुने से गंगा स्नान की अनुभूति तो नहीं मिलती,

लेकिन तपन को शांत करने के लिए शितल जन के पान की शान्ती अवश्य मिल जाती है। इस रुप में शेखर की कामवृत्ति का विकास देखा जा सकता है।

4.1.4 भय :-

शेखर अकेले अजायबघर में एक भीमकाय बाघ को देखकर भयभीत हो जाता है। वह नकली बाघ को ही असली समझकर डरकर भागता है। यह घटना उसके मन में घर कर बैठती है। वह बूरे सपने देखने लगता है। किंतु एक बार वैसा ही बाघ घर में लाया जाता है तब वह उसे चाकू से फाड़कर जान लेता है कि डर डरने होता है। सब भयानक वस्तुएँ चाम से ढँकी घास-फूस से बनी हैं। इनसे डरना मूर्खता है। मृत्यु का भय भी केवल इसलिए है कि जीना अच्छा लगता है। अनुभव एवं तर्क-संगत उत्तर से भय का निराकरण तो हो जाता है किंतु अहं और यौन-वृत्तियाँ उसके जीवन को क्षुब्ध बना देती हैं।

4.1.5 विद्रोही एवं क्रांतिकारी :-

शेखर के मन-मस्तिष्क में उठनेवाला विद्रोह किसी एक व्यक्ति या विशिष्ट संस्था के प्रति नहीं है, अपितु यह विद्रोह तो उसका स्वभाव और धर्म बन चुका है। वह अपने प्रति भी उतना ही विद्रोही है। धीरे-धीरे यह विद्रोह बौद्धिक और सैद्धांतिक दिखाई देने लगता है। शेखर जीवन के संघर्षों में जितना उठता-गिरता है उतनी ही उसकी विद्रोह-वृत्ति अपनी तीक्ष्णता खो बैठती है जैसे सरिता-प्रवाह में संघर्षरत पत्थर अपना नुकीलापन खो देता है। उपन्यास के दूसरे भाग में तो वह सामंजस्यवादी मनुष्य के रुप में बदलता दिखाई देता है।

जीवनी की मूलभूत प्रेरणा क्रांतिकारी या विद्रोहात्मक है। क्रांति और विद्रोह किस के प्रति? `जीवनी` में क्रांति और विद्रोह स्वंय अपना लक्ष्य है। यह एक मनोवृत्ति ही नहीं एक स्वतंत्र जीवन-दर्शन है। इसके संदर्भ में डॉ.नंददुलारे वाजपेयी लिखते हैं - ``विद्रोह किसी वस्तु या स्थिति के प्रति नहीं, संपूर्ण वस्तुओं और सारी स्थितियों के प्रति। सृष्टि के प्रति, क्योंकि वह अधूरी और अपूर्ण है ; समाज के प्रति क्योंकि वह संकीर्ण है और विकास को विघातक है। सभी संस्थाओं के प्रति, समस्त रीतियों के प्रति, जीवन-मात्र के प्रति विद्रोह क्रांतिकारी की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। विद्रोह के पश्चात? कुछ नहीं क्योंकि निर्माण भी

विद्रोह ही है, विद्रोह में ही निर्माण है। इसीलिए शवेखर के विद्रोही व्यक्तित्व के प्रति लेखक को इतनी निष्ठा है। प्रकृति की अपूर्णता के विरुद्ध संघर्ष तथा समाज के बंधनों के विरुद्ध संघर्ष ≠ शेखर की क्रांतिकारी जीवन की यही धारा है। इस विद्रोह का परिणाम अति भयानक है जो शेखर के चरित्र को अत्यधिक असक्तिपूर्ण, व्यक्तिवादी और यातनामय ही नहीं बनाता, उसे एक असामाजिक नृशंस और घातक व्यक्तित्व के रुप में भी उपस्थित करता है।``[4] अंत में शेखर को क्रांतिकारक होने से जेल जाना पड़ता है शेखर के चरित्र का अध्ययन करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि शेखर अहंभावी, कामुक, जिज्ञासु, विद्रोही एवं क्रांतिकारी पात्र है। शेखर के चरित्र निर्माण से अज्ञेय को पूर्ण सफलता मिली है।

4.2 भुवन :-

नदी के द्वीप वस्तुत: एक चरित्र-प्रधान उपन्यास है। इसमें केवल चार प्रमुख पात्र हैं - भुवन, रेखा, चंद्रमाधव और गौरा। किंतु प्रधानता केवल भुवन और रेखा की है। इन दोनों में भी भुवन ही विशिष्ट प्राधान्य पाता है। वह सामाजिक विधि-निषेध से किंचित तटस्थ हैं ; बुद्धिजीवी मध्यवर्ग का है। भुवन पुरातन मूल्यों में विश्वास नहीं रखता, आर्थिक रुप से स्वावलंबी है और अपनी प्रवृत्तियों का अनुसरण करता है। वह बाहय से तो सामाजिक परंपरा की अवहेलना करता हैं किंतु भीतर से संस्कार मुक्त नहीं हो सका है। अर्थात उसके व्यक्तित्व में परस्पर विरोधी विशेषताएँ पाई जाती हैं जिनमें सौंदर्यप्रियता, विवशता, संवेदनशीलता, व्यावहारिकता आदि का अंतर्भाव किया जा सकता है।

4.2.1 सौंदर्यप्रियता :-

अज्ञेय का वेदना-दर्शन यदि रेखा के व्यक्तित्व में साकार हुआ है तो उनके प्रेम-दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष भुवन के व्यक्तित्व में अंकित है। भुवन प्रेम को वासना का पर्याय नहीं मानता है। उसमें गहरा सौंदर्यबोध है। वह रेखा के आत्मसमर्पण को पहले आनाकानी करता है उसका आशय यही है। सुंदरता मन में बसा रखने की चीज है, नष्ट करने की नहीं। वह रेखा से कहता है - `जो सुंदर है उेस मिटाना नहीं चाहिए... तुमने जो दिया है, उसके सौंदर्य को मैं मिटाना नहीं चाहता, रेखा को जोखम में नाहीं डालना चाहता। वह सुंदर है, बहुत सुंदर। उसके इस व्यवहार से प्रभावित होकर ही रेखा उसे अपना सर्वस्व समर्पित कर देती है और उसे जोखम में न डालने के लिए गर्भपात करवा के विवाह के प्रस्ताव को हठी होकर अमान्य

करती है। वह सौंदर्य के साथ-साथ संवेदनशील कलाप्रेमी है। वह रेखा के दिलचस्प चरित्र के प्रति केवल बौद्धिक कौतुहल रखता है। किंतु प्रतापगढ़ स्टेशन पर रेखा के स्पर्श की चुनचुनाहट को फाफामऊ तक महसूस करता है। नौकुछिया ताल के डाक बंगले में जब उन्मत्त रेखा कहती है - `मैं तुम्हारी हूँ, भुवन मुझे लो।` तब सुंदरता की आड़ लेकर वह रेखा के समर्पण को अस्वीकार करता है। यहाँ पर स्पष्ट होता है कि भुवन में सौंदर्यप्रेम की प्रधानता है।

4.2.2 संवेदनशील :-

भुवन में बुद्धि और संवेदना का अद्भुत योग है। वह एक साथ वैज्ञानिक और साहित्यिक दोनों है। असाधारण व्यक्तियों में ही ऐसा योग हो सकता है - इसलिए भुवन का व्यक्तित्व असाधारण है। उसमें बालसुलभ सरलता, संवेदनशीलता और अनुभूतिगत ईमानदारी है, जिससे रेखा और गौरा दोनों आकर्षित होती हैं। उसके इन असाधारण गुणों के कारण ही दो नारियाँ उसे देवतुल्य मानकर पूजती हैं। भुवन में गहरा अनुशासन और मर्यादा का भाव है। वह मिलन के चरम क्षणों में भी अनुशासक बरकरार रखता है। वह उसके परिणाम को भोगने के लिए भी प्रस्तुत है। इससे स्पष्ट होता है कि भुवन संवेदनशील होते हुए भी बहुमुखी व्यक्तित्व का धनी है।

4.2.3 कर्तव्यों के प्रति सजग :-

भुवन का नैतिक विवेक अधिक प्रबुद्ध और सशक्त है, इसलिए वह रेखा के प्रति आकृष्ट होकर भी एक सकरुण परिस्थिति में द्रवित होकर ही उससे यौन-संबंध कायम कर पाता है। गर्भपात के बाद रेखा गंभीर रुप से अस्वस्थ हो जाती है। भुवन का कर्तव्यनिष्ठ, व्यावहारिक, स्नेहल एवं सेवापरायण रुप इस प्रसंग में उजागर होता है। अज्ञेय के प्रेम दर्शन की भी इसी प्रसंग में अभिव्यक्ति हुई है। प्रेम दायित्वहीन नहीं होता। गहन प्रेम की शर्त है, प्रिय की कल्याण कामना। रेखा और भुवन के प्रेम में यह दृष्टि अंतर्निहीत है। भुवन कल्पनाजीवी, पलायनवादी नवयुवक होता तो जिम्मेदारियों का निर्वाह करने से कतराता। बाद में वह व्यथित हो उठता हे और भारतीय भूमि पर जापानी बम गिरने पर युद्ध में शामिल होकर सक्रिय रुप में वह अपना क्षोभ प्रकट करता है। इस प्रकार उसका कर्तव्य-पथ उसका नैतिक विवेक निश्चित करता है।

4.2.4 विवशता :-

इन्सान जिंदगी में कभी न कभी परिस्थितिवश विवश बन जाता है। तब वह कई बार पलायनवादी बन जाता है। भुवन भी ऐसाही पात्र है जो जीवन से पलायन तो नहीं करता परंतु विवश होकर सैन्य में भरती हो जाता है। तथा भुवन अंत में गौरा के प्रति समर्पित होने के लिए मानो विवश है तथा कहता है - ``कितना बड़ा है जीवन, कितना विस्तृत, कितना गहरा, कितना प्रवहमान ; और उसमें व्यक्ति की ये छोटी-छोटी इकाइयाँ - प्रवाह से अलग जो कोई अस्तित्व नहीं रखतीं, कोई अर्थ नहीं रखती, फिर भी संपूर्ण हैं, स्वायत्त है अद्‌वितीय है और स्वत: प्रमाण है, क्योंकि अंततोगत्वा आत्मानुशासित है, अपने आगे उत्तरदायी है...हम सब नीद के द्‌वीप हैं, द्‌वीप से द्‌वीप तक सेतु है। सेतु दोनों ओर से पैरों के नीचे रौंदा जाता है, फिर भी वह दोनों को मिलाता है, एक करता है ......गौरा, मैं तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाता हूँ - अनुरोध के हाथ क्या तुम ीी अपने हाथ मेरी ओर बढ़ाओगी ृ वरद के हाथ ; कि इस प्रकार हम एक सेतु बन सकें जिस पर ईश्वर अगर है तो उसका आसन है?``[5] अंत में भुवन सेना में भरती हो जाता है। वहाँ से वापीस आकर गौरा को अपनाता है। इस रुप में भुवन की चारित्रिक विशेषताएँ पाई जाती है।

4.3 चंद्रमाधव :-

चंद्रमाधव `नदी के द्‌वीप` का दूसरा प्रमुख पात्र है। अज्ञेय ने उसका चित्रण खलनायक के रुप में किया है। नायक भुवन का वह कॉलेज का सहपाठी रहा है। चंद्रमाधव पेशे से पत्रकार है। वह स्थानीय पत्र `पायनियर` का संवाददाता है। उसमें हमेशा ही सनसनी खोज करने की लालसा रही है। कॉलेज के पश्चात उसका विवाह हुआ। अच्छी-खासी पत्नी और एक मध्यवर्गी जीवन की सभी सुविधाएँ होकर उसकी सनसनी उसे परिवार से अलग कर देती है। इसी सनसनी की तलाश में वह आफ्रिका, अबीसीनिया, इटली, जर्मनी, चीन, कोरिया आदि कई देशों के दौरे भी कर चुका है। अस्थिर मन के कारण वह किसी भी बात पर स्थिर नहीं रह पाता न अपने गृहस्थी के प्रति, न अपने पेशे के प्रति, न अपने विचारों के प्रति। काम उसके जीवन का प्रमुख अंग रहा है। और उसी की तलाश में सभी रुढि-परंपरा के बंधनों से तोड़कर स्वच्छंदी जीवन जीना चाहता है। इसी सिलसिले में वह रेखा और गौरा को अपने प्रेमजाल में फँसाने का भरसक प्रयास करता है, परंतु उसमें वह पूर्णत: असफल रहता है। हारकर वह बंबई चला जाता है और

वहीं पर एक प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री से विवाह करता है। उसके इस जीवन में अन्य भी विशेषताएँ पायी जाती हैं -

4.3.1 सनसनी खोज की चाह :-

चंद्रमाधव उपन्यास के आरंभ से अंत तक सनसनी की खोज में ही दिखाई देता है। कॉलेज जीवन से लेकर अब तक के जीवन में इसी दृष्टि के कारण वह जिंदगी के बहुत से मोर्चे पर असफल रहा है। इसी सनसनी की तलाश में वह कई विदेशी यात्राएँ भी कर चुका है। बंधनहीन स्वच्छंद जीवन जीने का वह लालची है। क्लब, शराब तथा काफी हाऊस ही उसकी दुनिया है। इसी कारण पत्नी से जी भरने के बाद उसे छोड़ आता है। परित्यक्ता रेखा को नौकरी की तलाश में सहायता करने के पीछे भी उसका उसे पाने का सनसनी पूर्ण विचार ही छिपा रहता है ; न कि किसी प्रकार की सहायता का भाव। रेखा जैसी स्वच्छंद नारी का अपने मित्र के रुप में भुवन से परिचय कराकर भी वस्तुत: चंद्रमाधव भुवन के सामने एक सनसनी ही उत्पन्न कर देना चाहता है। परंतु परिणाम उलटा हो जाता है । रेखा से कोरा उत्तर पाकर वह गौरा की ओर आकर्षित होता है। वहाँ भी निराशा ही हाथ लगने पर अतृप्त वासना की आग बुझाने के लिए फिर से पत्नी की ओर अग्रेसर होता है। लेकिन सनसनी की खोज में भटकता हुआ उसका मन वहाँ पर भी स्थिर नहीं रह पाता। अंत में बंबई जाकर किसी फिल्म अभिनेत्री से विवाहबद्ध होकर एक नई सनसनी पैदा कर देता है। इसप्रकार उसका पूरा जीवन ही सनसनी का दस्तावेज है। चंद्र के इसी सनसनी के बारे में भुवन कहता है - ``चंद्रमाधव सनसनी का खोजी है ? असल में उसने जीवन खोजा है, तीव्र बहता हुआ प्लवनकारी जीवन और वह उसे मिला कहाँ है ? मिली हैं यह छोटी-छोटी दुच्ची अनुभूतियाँ, चुटकियाँ और चिकोटियाँ।``[6] इससे चंद्रमाधव के सनसनी पूर्ण जीवन की विशेषता स्पष्ट होती है।

4.3.2 कामुकता :-

चंद्रमाधव हमेशा ही सनसनी के पीछे दौड़ता रहा है। जिसके लिए उसे विदेश की यात्राएँ भी करनी पड़ी। युरोप का भोगवाद तथा निराशावाद उसके मन में गहरा पैठ गया है। परिणाम स्वरुप वह स्त्री को सिर्फ भोग की वस्तु समझता है। इसी कारण वह अपने परिवार से जुट नहीं पाता। वह पत्नी की जो साधारण इच्छाएँ थी वह तक पूरी नहीं कर पाता। लेखक इन इच्छाओं की ओर इंगित करते हुए लिखते हैं -

``कॉलेज छोड़ने के अगले वर्ष उसकी शादी हो गयी थी। लड़की साधारण पढ़ी थी - मैट्रिक और भूषण पास ; साधारण सुंदरी थी - सप्त रंग, अच्छे नख-शिख ; साधारण बुद्धिमत्ता थी - घर सँभाल लेती थी , साथ घुम लेती थी, मित्रों-मेहमानों से निबाह लेती थी और पढ़े-लिखों की बातचीत में आत्म-विश्वास नहीं खोती थी। पत्नी ने उससे कुछ अधिक माँगा नहीं था, साधारण गिरस्ती की जो माँगे होती है बस ; कुछ अधिक दिया भी नहीं था, साधारण गिरस्ती जो देती है, बस।``[7] परंतु चंद्रमाधव इस जीवन में असफल रहता है। चंद्रमाधव की तृप्ति उसकी पत्नी जब नहीं कर पाती तब वह बिना सोचे-समझे पत्नी और बच्चों को उनके मैंके छोड़ आता है। महिने में कुछ पैसे और एक-आध चिट्ठी भेज देता है। परंतु इसे गृहस्थी नहीं कहते। तथा रेखा और गौरा को पाने में असफल होने के कारण फिर अपनी कामवासना को बुझाने के लिए पत्नी को ले आता है। उसकी मनोभावनाओं का विचार किए बिना ही मनोविकृत रुप में उसे भोगता है। अपनी इच्छाएँ पूर्ण होने पर फिर से पत्नी को छोड़ देता है। इसप्रकार वह अपनी गृहस्थी में पूर्णत: असफल दिखाई देता है।

4.3.3 असफल प्रेमी :-

चंद्रमाधव अपनी गृहस्थी में पूरी तरह से असफल तो रहता ही है, परंतु अथक् प्रयास और प्रेमजात फेंकने के पश्चात भी प्रेम में असफल रहता है। रेखा चंद्रमाधव के दूर से परिचित हेमेंद्र की परित्यक्ता है। आधुनिकता और सेक्स रेखा के जीवन का प्रमुख आधार रहा है। चंद्र रेखा की इसी मजबूरी का फायदा उठाना चाहता है। परिणाम स्वरुप वह रेखा को अनेक जगहों पर नौकरी दिलवाने में मदद करता है। वजह यह कि रोजा उसके एहसानों के तले दब जाए और धीरे-धीरे चंद्रमाधव उसपर अपना प्रभाव जमा सके। परंतु रेखा चंद्र के एहसान मानती जरुर है, लेकिन वह एक स्वतंत्रतावादी स्त्री होने के कारण चंद्रमाधव उसे पहचानने में गलती कर बैठता है। रेखा को असाधारण नारी समझकर वह उसकी ओर आकर्षित होता रहता है, फिर भी अपनी कुंठित आशिकी रेखा के सम्मुख वह व्यक्त नहीं कर पाता। अंत में जब उसे इस बात का पता चलता है कि रेखा को चाहता तो वह खुद है लेकिन रेखा अपना सर्वस्व भुवन की झोली में डालने के लिए लालायित है। तब चंद्र की रेखा को पाने के लिए की जानेवाली गतिविधियाँ तेज होने लगती है। वह अनेक प्रकार से रेखा पर अपनी प्यार की मोहिनी डालता रहता है। चंद्रमाधव पहाड़ पर सफर के लिए जाने की योजना बनाता है। वहाँ जाकर वह अपने मन के दमित विचारों को रेखा के सम्मुख व्यक्त करना चाहता

है परंतु उसमें वह नाकामयाब रहता है। फिर से वह अपनी असफल गृहस्थी को लेकर अपने दर्द, असंतोष की व्यथा कहकर रेखा के मन में अपने प्रति सहानुभूति पैदा करने की कोशिश करता है। परंतु रेखा पर इसका कतई असर नहीं होता। सभी जगहों पर हारने के पश्चात वह एक आखरी दाँव खेलता है। चंद्र अपने मन का पूरा पाप, कुंठित वासना, दिलफेक आशिकी एक प्रेमपत्र पर उतारता है। जिसमें वह लिखता है - ``रेखा.......तुम्हारे बिना मेरी गति नहीं है।.......तुम्हारे अधुरेपन को मैं ही पूरा कर सकता हूँ, मैं ही और कोई नहीं! मैं तुम्हारा सम्मान करता हूँ, सदा करूँगा, तुम्हारे पैर चूमूँगा।.......तुम्हारा प्यार मेरे लिए जन्नत है.........मैं बड़ा लालची रहा हूँ , जीवन से मैंने बहुत माँगा है, छोटी चीज कभी नहीं माँगी, बड़ी से बड़ी मानता आया हूँ, मैं सच कहता हूँ कि इससे आगे मेरी और कोई माँग नहीं है, न होगी - यह मेरी सारी चाहनाओं, कल्पनाओं, वासनाओं, आकांक्षाओं की अंतिम सीमा है, मेरे अरमानों की रति, मेरी थकी प्यासी आत्मा की अंतिम मंजित। रेखा तुममें असीम करुणा है - तुम तत्काल प्यार नहीं दे सकती तो करुणा ही दे दो, मुक्त करुणा, फिर उसी में प्यार उपजेगा।.......रेखा भविष्य है, होता है, तुम मानो ! पर तुम्हारे बिना मेरा भविष्य नहीं है, यह मैं क्षण-क्षण अनुभव करता हूँ। मैं चाहता हूँ, किसी तरह अपनी सुलगती भावना की तपी हुई सलाख से यह बात तुम्हारी चेतना पर दाग हूँ कि तुम्हारी और मेरी गति, हमारी नियति एक है, कि तुम मेरी हो रेखा, मेरी जान.......तुम्हें मेरे पास आना ही होगा, मुझसे मिलना ही होगा।``[9] इसप्रकार वह प्रेम पत्र द्वारा अपना प्रेमजाल रेखापर फेंकता है। लेकिन रेखा उसे इन्कार कर देती है। चंद्र की इस योजना पर भी पानी फेर जाता है। इसप्रकार रेखा को उसकी परित्यक्ता की मजबूरी के जरिए लुटने के लिए हर प्रयास करनेवाला चंद्रमाधव अपनी हर चाल में नाकामयाब होता है। और वह रेखा को पाने से पहले ही खो देता है।

4.3.4 गौरा पर रौब जमाने की कोशिश :-

रेखा को पाने में असफल चंद्र गौरा की ओर आकर्षित होता है। गौरा भुवन की बचपन की छात्रा है। विदेश जाते वक्त चंद्रमाधव भुवन के पास ठहरता है। वही पर उसकी भेंट गौरा से होती है। आगे चलकर वह गौरा पर भी अपना प्रेमजाल फेंकता है। परंतु उसका असर गौरा पर नहीं होता। तथा वह पहली मुलाकात से ही गौरा पर अपने गुरु भुवन को ही अपना सखा मानने लगी है। फिर भी अपनी इन जलिल हरकतों से वह बाझ नहीं आता। विदेश से भी गौरा के साथ उसका पत्राचार चलता रहता है। गौरा उतनी

दिलचस्पी से जवाब नहीं देती फिर भी उसपर अपना प्रभाव जमाने के लिए पत्र के साथ पुस्तकें या चित्र भेज देता है। पत्र में ऐसे स्थलों का ही वर्णन करता है, जिसमें गौरा को दिलचस्पी हो सकें। जैसे - ``इंग्लंड में शेक्सपियर के घर का, ताल-प्रदेश का जहाँ वर्डस्वर्थ और कोलरिज की काव्य-प्रतिमा मुखरित हुई, फ्रांस के हयूगो के स्मारक का, नोत्रदाम का, लूव्र संग्रहालय का, जर्मनी में गयरे के घर का, ओनरामरगाड के ईसा जीवन नाटक का........।``[10] साथ ही पत्र में उसकी अपनी व्यक्तिगत जानकारी ही अधिक देता है। परंतु गौरा इसका विशेष महत्त्व नहीं रखती। हताश चंद्र फिर एक नई चाल चलता है। दिल्ली में अचानक उसकी भेंट रेखा से होती है। तब वह सोचता है कि शायद रेखा की मदद से गौरा की अक्ल ठिकाने लायी जा सकती है। इसी दुषित विचार से वह रेखा और गौरा को मिलता है, ताकि रेखा का भेद खुल जाए और गौरा ीुवन से नफरत करने लगे। बातचित के दौरान कुछ ऐसी बाते करता है कि जिससे दोनों में दूरी निर्माण हो जाए। परंतु उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता, बल्कि दोनों एक हो जाते हैं और दोनों को मिलाने के चंद्र के इस कार्य के लिए उसे धन्यवाद देती है, तब चंद्रमाधव के किए-कराए पर पानी फिर जाता है और वह फिर से निराश हो जाता है। इसप्रकार से रेखा के बाद गौरा से भी नफरत ही मिलती है।

4.3.5 ईर्ष्या-भाव :-

दूसरे की उन्नति या श्रेष्ठता सहज रुप से मनुष्य के मन ईर्ष्या उत्पन्न करती है। इसी रुप में भुवन के प्रति चंद्रमाधव के मन में ईर्ष्या निर्माण होती है। भुवन चंद्रमाधव का कॉलेज का सहपाठी और मित्र रहा है। रेखा से भुवन की मुलाकात चंद्र द्वारा ही होती है। चंद्र रेखा को चाहता है लेकिन जब वही रेखा भुवन की ओर आकर्षित होती दिखाई देती है तब चंद्र का मन ईर्ष्या से जल उठता है। और वह भुवन के प्रति अपने मन में ईर्ष्या-भाव रखता है। उपन्यास में उसकी यह जलन कहीं प्रकट तो कहीं अप्रकट रुप में दिखाई देती है। चंद्रमाधव भुवन के सहारे स्वयं को उसका हितचिंतक दर्शाकर रेखा और गौरा को पाना चाहता है। रेखा पहाड़ की सफर के लिए अकेली नहीं आएगी यह वह जानता है इसीलिए वह भुवन को भी साथ चलने की योजना बनाता है। परंतु मन में सोचता है कि ....``चंद्र को भुवन और रेखा के साथ नहीं जाना है, भुवन को चंद्र और रेखा के साथ जाना है, क्योंकि एक ओट के रुप में ही उसकी उपयोगिता है।``[11] परंतु उसकी इस योजना पर पानी फिर जाता है तब वह भुवन से और भी ईर्ष्या करता है। वह भुवन को ईर्ष्यावत बुद्धू समझकर लिखता है - ``मेरा पहाड़ पर जाना तो न हो सकेगा। मेरा साथ उन्हें अभिष्ट भी नहीं है। वह

तुम्हारे साथ ही जाना चाहती है। खुशकिस्मत हो दोस्त! बुद्धू हो तो क्या हुआ।``[12] इसप्रकार वह भुवन के ही सहारे से लेकिन उससे बचकर रेखा को पाना चाहता है। गौरा पर मोहित चंद्र गौरा को भुवन की ओर आकर्षित देखकर भुवन पर जलता है। चंद्र को जब पता चलता है कि भुवन के परामर्श से गौरा ने शादी के लिए इंकार कर दिया है तब एक पत्र में वह गौरा को लिखता है - ``सुना था कि आपके विवाह का निश्चय हुआ था, फिर सुना कि बात टूट गई, यह भी सुना कि `मास्टर साहब` के परामर्श से।....... भुवन जैसे विज्ञान के नशेबाज की बात को जरुरत से ज्यादा अहमियत भी दे दी जा सकती है। वह तो उब-डूब भी नहीं है, डूब ही डूब है।``[13] इसके पीछे चंद्र की एक ही इच्छा हो सकती है कि किसी भी तरह गौरा भुवन से अलग हो जाए। ईर्ष्या की आग में जलता चंद्रमाधव रेखा और गौरा से जब मिलता है तब वह जानबूझकर भुवन की ही बात छेड़ता है। यहाँ उसका भुवन के प्रति मित्र-प्रेम नहीं बल्कि उसके मन में भुवन के प्रति छुपा हुआ द्वेष ही दिखाई देता है। उसकी इसी वृत्ति के कारण वह अपने दोस्तों को खो देता है। ईर्ष्याभाव इंसान को अंधेरे के गर्त में धकेलता है।

4.3.6 भोगवादी :-

सनसनियों को अपने जीवन का अंग माननेवाला चंद्रमाधव अपने मन की अतृप्त वासना की तृप्ति के लिए पूरे उपन्यास में भोग के पीछे लगा दिखाई देता है। बंधवनों में बंधा यंत्रवत जीवन उसे पसंद नहीं है। अपनी जिंदगी वह खुद की मर्जी से जीना चाहता है। वह एक के बाद ऐ नये आकर्षण को खोजने का अनवरत प्रयत्न करता है। अत: वह विरोध और निषिद्ध के रोमांचकारी रस का रसिक है। इसी कारण अपनी पत्नी के साथ उसके मन की तृप्ति नहीं होती। उसकी भोग-पिपासु वृत्ति के बारे में केदारनाथ शर्मा कहते हैं - ``वह जिंदगी का तमाशाई नहीं है, वह खिलाड़ी है, नायक है, वह जिंदगी को अंगूर के गुच्छे की तरह तोड़कर उसका रस निचोड़ लेगा, लता को झंझोड डालेगा, कुंज में आग लगा देगा, वह आराम से नहीं बैठेगा।``[14] इसी भोगवादी वृत्ति से वह सभी की ओर आकर्षित होता रहा है। पत्नी रेखा, गौरा और अभिनेत्री चंद्रलेखा को उसने भोगवाद का ही केंद्र माना है। रेखा और गौरा से उपेक्षा पाने पर वह मध्यवर्ग की औरतों की निंदा करता है। वह दूसरों की बिबियों के साथ रंगरलियाँ मनाने का शौकिन है। वह सोचता है -``पुराने जमाने से प्रतिनिधियों की मारफत शादी हो जाती थी ऋ वर जहाँ खुद नहीं जा सकता था, प्रतिनिधि भेज देता था। क्या बेहूदगी है। प्रतिनिधिक शादी से सकती है तो प्रतिनिधिक सुहाग-रात...! पर

यह भी तो, राजा लोग अपनी रानियों को नियोग के लिए भेजा करते थे ऋषियों के पास वह भी तो प्रतिनिधिक .... उसे असल में ऋषि होना चाहिए था पुराने जमाने का.......।``[15] ऐसे विचारों से स्पष्ट होता है कि भोग के लिए वह कितना गिरा हुआ पात्र है। केवल शारीरिक भोग ही उसका प्रमुख उद्देश्य दिखाई देता है। वह केवल भूख के समय ही पत्नी को ओढ़ लेता है। उसका भोगी मन इसी उहापोह में अंत में एक अभिनेत्री में तृप्ति पाने की कोशिश करता है - पर कब तक के लिए? यह वह भी नहीं जानता। इसप्रकार पूरे उपन्यास में वह जो भी काम करता है वह सिर्फ अपने भोग के लिए ही करता है लेकिन अक्सर असफल ही रहता है।

4.3.7 निराशावादी :-

अस्थिर विचावरोवाले चंद्रमाधव पर यूरोप का निराशावाद पूरी तरह से छाया हुआ है। उसके लिखे पत्रों में यह निराशा स्पष्टत: पायी जाती है। वह क्षणिक सुख का उपभोक्ता है एवं भारतीय आशावाद का विरोधक है। जीवन के प्रति उसका आशाहीन दृष्टिकोण उसे जीवन से पलायन की ओर अग्रेसर करता है। वह कहता है - ``हमें जिसको जहाँ जितना थोड़ा-सा सुख मिलता है, उतना ही हमें आतुर और कृतज्ञ हाथों से ले लेना चाहिए - उसी का नाम स्वाधीनता है, बाकी सब संघर्ष है, संघर्ष अंतहीन आशाहीन संघर्ष.....।``[16] विदेशी परिवेश का वह प्रशंसक है। वह विदेशी स्वाधीनता और यहाँ के बंधनों की तुलना करते हुए विदेशी स्वाधीनता की ही प्रशंसा करता है। एक पत्र द्वारा युरोप के निराशावाद का समर्थन करते हुए वह लिखता है - ``यूरोप का निराशावाद शीघ्र ही सारी दुनियापर छा जायेगा। एक महान विस्फोट आ रहा है, गौराजी, और उसकी लपटें भारत को अछूता न छोड़ जाएगी ! स्वाधीनता का आंदोलन है ठीक है, लेकिन उस लपट का धुआँ व्यक्ति के स्वातंत्र्य का दम घोट जाएगा, उब-डूब की स्वाधीनता रह जाएगी, बस ! देखें आपका आशावाद क्या करता है, तब.....।``[17] इसप्रकार निसंकोच मन से यूरो के निराशावाद को वह स्वीकारता है। भुवन एक वैज्ञानिक होकर भी सन 1939 में यूरोप में आरंभा हुए युद्ध में संस्कृति की रक्षा करने की बात सोचता है। लेकिन चंद्रमाधव एक जिम्मेदार पत्रकार होकर भी इस युद्ध में संस्कृति विनाश के लिए मनोकामना करता है। वह संस्कृति का विरोध करता है। इसप्रकार से वह एक भारतीय होकर भी निराशावाद के कारण संस्कृति विनाश के सपने देखने लगता है। वह भारतीय संगीत को भी नीचले स्तर का मानता है। भोगवाद की अतृप्ति और बढ़ती हुई कुंठा के कारण वह जीवन के किसी भी

निश्चित मूल को वह पकड़ नहीं सका। वह दिशाहीन होकर निराशावाद का स्वीकार करते हुए अंत में कम्युनिस्ट हो जाता है। चंद्रमाधव की चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन करने के पश्चात स्पष्ट होत है की वह एक खल पात्र है। उसके चरित्र निर्माण में अज्ञेय जी पूर्णत: सफल रहे हैं।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन एवं विवेचन-विश्लेषण के पश्चात मैं इस निष्कर्ष तक पहूँचा हूँ कि शेखर `शेखर : एक जीवनी` का प्रमुख पात्र ही नहीं बल्कि नायक भी है। उसमें अहंभावी होना, कामुक, जिज्ञासू, विद्रोही एवं क्रांतिकारी आदि चारित्रिक विशेषताएँ पायी जाती है। इसके बावजूद भी हम कह सकते हैं कि लेखक को शेखर के चरित्र निर्माण में पूर्णत: सफलता मिली है।

भुवन `नदी के द्वीप` का नायक है वह अपने कर्तव्यों के प्रति सजग है, सौंदर्यप्रिय, संवेदनशील, परिस्थिति के कारण विवश आदि चारित्रिक विशेषताएँ भी उसमें पायी जाती है। चंद्रमाधव `नदी के द्वीप` का खल पात्र होते हुए भी प्रमुख पात्र है। वह सनसनी का खोजी, निराशावादी, भुवन से इर्षा करनेवाला, अपने गृहस्थी में असफल, गौरा पर रौब जमानेवाला पात्र है।

चंद्रमाधव एक खल पात्र है। भुवन के चरित्र को उँचा उठाने के लिए ही चंद्र में अनेक दोषों का निर्माण किया गया है। वह अपने किसी भी विचार या व्यवहार के प्रति स्थिर नहीं है। इसी कारण उसमें निराशावादी, भोगवादी, असफल प्रेमी जैसी विशेषताएँ पायी जाती हैं।

निष्कर्ष रूप में अज्ञेय जी के तीनों प्रमुख पुरूष पात्र मनोवैज्ञानिक है। शेखर के मन पर बचपन से लेकर जवानी तक हर एक घटना या दृश्य का बहुत ही विपरित परिणाम होता है। उसके मन में अनेक जिज्ञासाएँ जाग उठती हैं, लेकिन कोई भी उस जिज्ञासा की पूर्ति नहीं करता। इसी कारण वह बहुत ही कुंठित, अहंवादी एवं विद्रोही बनता है। भुवन तो कहने के लिए ही वैज्ञानिक है। हर वक्त वह कभी रेखा के पिछे तो कभी गौरा के पिछे दौड़ता है। रेखा और गौरा के बारे में उसका मन द्वंद्वं में उलझ जाता है और वह विवश होकर सैन्य में भरती होता है। चंद्रमाधव प्रत्येक नारी के प्रति आसक्त दिखायी देता है। उनको पाने के लिए हर संभव कोशिश करता है। वह खुद को दूसरों की सहानुभूति का पात्र बनाना चाहता है।

भुवन के प्रति रेखा और गौरा को आसक्त देखकर वह भुवन से ईर्ष्या करने लगता है। उसके व्यक्तित्व में कामुकता तथा भोगवाद स्पष्ट ही झलकता है।

इस प्रकार तीनों पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के पश्चात हम यह कह सकते हैं कि अज्ञेय जी को इन पात्रों के मनोवैज्ञानिक चित्रण में बहुत ही सफलता मिली है।

: संदर्भ :

1. डॉ. शांतिस्वरुप गुप्त - पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत, पृष्ठ. 366
2. गिरीधर प्रसाद शर्मा- हिंदी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, पृष्ठ. 133
3. त्रिभूवन सिंह - हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद, पृष्ठ. 428
4. डॉ. नंददुलारे वाजपेयी - आधुनिक साहित्य, पृष्ठ. 175
5. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ. 335
6. वही, पृष्ठ. 42
7. वही, पृष्ठ. 43
8. वही, पृष्ठ. 103 से 106
9. वही, पृष्ठ. 69
10. वही, पृष्ठ. 53
11. वही, पृष्ठ. 95
12. वही, पृष्ठ. 79
13. केदारनाथ शर्मा - पृष्ठ. 80
14. अज्ञेय- नदी के द्वीप, पृष्ठ. 42
15. वही, पृष्ठ. 70
16. वही, पृष्ठ. 79

****